सच्चा दशहरा कैसे मनायें ?

भारतवासी हर वर्ष रावण के पुतले को जलाकर 'बुराई पर अच्छाई की विजय' के रूपमें 'दशहरा' मनाते आए हैं।

पुतला जलाते आए, असली रावण ज़िन्दा है

विचार की बात है कि जब शत्रु को मार दिया, और मारने के बाद जलाकर भस्मीभूत भी कर दिया, उसके बाद फिर हर वर्ष उसका पुतला बनाकर जलाने से क्या प्रयोजन ? किसी का पुतला प्रायः रोष प्रकट करने के लिए ही जलाया जाता है। जब किसी शक्तिशाली व्यक्ति का हम कुछ नहीं बिगाड़ सकते तो उसका पुतला जलाकर अपनी नाराज़गी अथवा असन्तुष्टता प्रकट करते हैं। वह व्यक्ति अपने स्थान पर ज्यों का त्यों बना रहता है जब तक कोई उसको वास्तव में पराजित न करे। पुतला कमज़ोर जलाते हैं। देखा जाए तो हर वर्ष प्रतीकात्मक राम से प्रतीकात्मक रावण के पुतले को बाण मरवाकर जलाने से हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

वास्तव में हम असली रावण को जानते ही नहीं। वह तो अभी तक ज़िन्दा है और हर वर्ष पहले से भी अधिक बलवान होता जा रहा है। उसका शासन और अधिक मज़बूत होता जा रहा है। शायद इसीलिए उसके पुतले को भी हर वर्ष थोड़ा और अधिक बड़ा बनाते रहते हैं।

रावण के दस शीश ?

किसी भी मनुष्य के सचमुच के दस सिर तो हो नहीं सकते। वास्तव में दस शीश वाला रावण आसुरी सम्पदा का प्रतीक है। ठीक उसी प्रकार जैसे चतुर्भुज विष्णु दैवी सम्पदा का प्रतीक है। जैसे विष्णु के दो हाथ पावन देवता श्री नारायण और दो हाथ पावन देवी श्री लक्ष्मी के परिचायक हैं, उसी तरह रावण के पांच सिर पतित नर और पांच सिर पतित नारी के पाँच विकारों– काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार रूपी आसुरी लक्षणों–के प्रतीक हैं। रावण का अर्थ है रूलाने वाला, और इन पांच विकारों ने सभी आत्मा–रूपी सीताओं को रावण के कारागार में बन्दी बना रखा है और वे उस एक 'पतित–पावन' सच्चे राम रूपी परमात्मा को इस जेल से छूटने के लिए पुकारती रहती हैं।

असली रावण कहाँ है ?

भारतवासी रावण को पड़ोसी देश श्री लंका का राजा मानते आए हैं। किन्तु जैसाकि पहले बताया गया दस सिर वाला रावण कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं था। वह नर–नारी के पांच–विकारों का प्रतीक है जिसका निवास इन विकारों के वशीभूत प्राणियों के हृदयों में है। उनके आचार, विचार, आहार और व्यवहार पर विकारों अर्थात आसुरी वृत्तियों रूपी रावण का शासन चलता है।

एक विचित्र वृतान्त की पुनरावृति

आजकल जो दशहरा मनाते हैं, वह सच्चे राम अर्थात पतित–पावन परमात्मा के अवतरित होकर मनुष्यमात्र की आसुरी वृत्तियों को विनाश करके सच्चा रामराज्य स्थापित करने का स्मृति दिवस है। जब सच्चा राम राज्य स्थापित हो गया जिसमें राजा–प्रजा सभी सुखी थे, और जिसका गायन है ''देहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज्य नहीं करें संतापा''। उसमें तो रावण का नाम निशान भी शेष नहीं रहता और वहाँ पर तो दशहरा मनाने का कोई प्रश्न ही नहीं था। 'दशहरा' जिसे 'विजय दशमी' भी कहते हैं, का वास्तविक अर्थ है नर–नारी के 'दस' विकारों पर विजय प्राप्त करने का स्मृति दिवस।

फिर वह समय भी आता है जब रामराज्य की अवधि पूरी हो जाती है और देवी–देवता पुण्यक्षीण होकर वाममार्ग में चले जाते हैं। तब रावण–रूपी पाँच विकार उनमें पुनः प्रविष्ट होते हैं। और वे शनेः–शनेः पावन देवी देवता से साधारण पतित मनुष्य बन जाते हैं। विश्व देवलोक से बदलकर मृत्युलोक बन जाता है। ''विकर्मी'' संवत शुरू हो जाता है। तभी से रोग, शोक, अकालमृत्यु का सिलसिला शुरू हो जाता है। तब पुनः रावण के पुतले को जलाकर दशहरा मनाना शुरू होता है।

इसके पश्चात् ज्यो–ज्यों विकारों का प्रभाव बढ़ता है, मनुष्य अधिक विकर्मी होते जाते हैं। सृष्टि तमोप्रधान होते–होते घोर कलियुगी दुःखमय नर्क–तुल्य बन जाती है। भक्तजन पूजा और आराधना द्वारा पतित–पावन सच्चे राम परमात्मा को पुकारने लगते हैं। आखिर जब अति धर्मग्लानि हो जाती है, पाप का घड़ा भर जाता है तो दयालु, कृपालु, निराकार परमात्मा शिव, जो श्री राम के भी ईश्वर हैं, जिनकी आराधना श्री राम ने 'रामेश्वर' के स्थान पर की थी, वह पुनः भारतभूमि पर अवतरित होकर, मनुष्यात्माओं को पतित से पावन बनने के लिए ईश्वरीय सद्ज्ञान और सहज राजयोग की मार्गदर्शना प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से देते हैं। इसी से पुनः सच्चे राम राज्य की स्थापना होती है।

सबसे बड़ी खुशखबरी यह है कि सच्चे रामेश्वर परमात्मा 'शिव' का यह ईश्वरीय दिव्य कर्त्तव्य वर्तमान समय 5000 वर्ष पूर्व की तरह हुबहू पुनरावृत हो रहा है।

अधिक जानकारी के लिए निकटवर्ती ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से सम्पर्क करें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com